(IJPS) 2021, Vol. No. 12, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

STUDY OF THE EFFECT OF CHANGES IN THE EVALUATION METHOD OF COGNITIVE AREA (SUBJECT BASED) AND NONCOGNITIVE AREA (COURTICULAR ACTIVITIES) ON THE PERSONALITY AND ACADEMIC ACHIEVEMENT OF STUDENTS

Sukhvinder Kaur

Principal, Government High School, Mahof Colony, Pilibhit

संज्ञानात्मक क्षेत्र (विषय आधारित) एवं असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं) के मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

श्रीमती सुखविंदर कौर

प्रधानाध्यापिका , राजकीय हाई स्कूल, महोफ कॉलोनी, पीलीभीत

ABSTRACT

Presently the prevailing education system is focused on the teachers to achieve good results in the examinations. Thus examinations make the process of education more effective, it is a matter of concern for the stakeholders. Periodic evaluation of educational institutions, teachers and students is essential to maintain the purity and quality of education. Several committees and commissions were set up from time to time to suggest improvements in education in general and evaluation systems in examinations in particular. Many institutes have made innovative efforts to improve the quality and efficiency in various processes of their examination systems especially in the conduct, administration and evaluation. In spite of all these efforts, some problems related to the examination system like examinations dominating the educational process, passing examinations has become more important than getting education, memorization examinations encourage selective study due to stereotypical questions. Marks obtained in examinations is not a reliable and valid measure of a student's performance. In the examination to be conducted in any subject in three hours, the evaluation of the subject taught by the student throughout the year is not justified and relevant. Evaluation is not just a measure of the achievement of the students, but it is an attempt to measure the various objectives of

the curriculum on a broader scale. Evaluation has been considered an integral part of teaching-learning. Through this, quality can be brought in education. Therefore, efforts are being made to link continuous and holistic assessment with classroom activities. The present research has been focused on these points, how successful is continuous and holistic evaluation in the classrooms and what is its effect on the personality and academic achievement of the students. According to the research findings, continuous and holistic evaluation has a significant impact on the achievement level of the students. Continuous and holistic evaluation of non-cognitive area (co-curricular activities) increases the achievement level of the students.

सारांश

वर्तमान में प्रचलित शिक्षा प्रणाली शिक्षकों द्वारा अध्यापन और विद्यार्थी को सीखने का पूरा प्रयास परीक्षाओं में अच्छे परिणाम प्राप्त करने पर केंद्रित है। इस प्रकार परीक्षाएं शिक्षा की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी करती हैं, यह हितधारकों के लिए चिंता का विषय है। शिक्षा की पवित्रता और गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए समय-समय पर शिक्षण संस्थान, शिक्षक और विद्यार्थियों का मूल्यांकन आवश्यक है। सामान्य तौर पर शिक्षा में सुधार और विशेष रूप से परीक्षाओं में मूल्यांकन प्रणालियों में सुझाव देने के लिए समय-समय पर कई समितियों और आयोगों का गठन किया गया। कई संस्थानों ने विशेष रूप से आचरण, प्रशासन और मूल्यांकन में अपनी परीक्षा प्रणालियों के विभिन्न प्रक्रियाओं में गुणवत्ता और दक्षता में सुधार के लिए अभिनव प्रयास किये हैं। इन सभी प्रयासों के पश्चात् भी परीक्षा प्रणाली से संबंधित कुछ समस्याएं जैसे परीक्षाओं का शैक्षिक प्रक्रिया पर हावी होना, परीक्षाओं में उत्तीर्ण होना शिक्षा प्राप्त करने से अधिक महत्वपूर्ण हो गया है, कंठात्मक परीक्षाएं टकसाली प्रश्नों के कारण चयनात्मक अध्ययन को प्रोत्साहित करती हैं। परीक्षाओं में प्राप्त अंक विद्यार्थी के प्रदर्शन का एक विश्वसनीय और वैध उपाय नहीं है। तीन घंटे में किसी भी विषय की आयोजित होने वाली परीक्षा में विद्यार्थी के वर्ष भर में पढ़ाये गये विषय का मूल्यांकन न्यायोचित एवं सुसंगत नहीं है। मूल्यांकन मात्र विद्यार्थियों की उपलब्धि को मापना नहीं अपितु, पाठ्यक्रम के विभिन्न उद्देश्यों को व्यापक स्तर पर मापने का प्रयास करना है। मूल्यांकन को शिक्षण अधिगम का अभिन्न अंग माना गया है। इसके माध्यम से शिक्षा में गुणवत्ता लायी जा सकती है। अतः सतत् और समग्र मूल्यांकन को कक्षा की गतिविधियों से जोड़ने के प्रयास किए जा रहे हैं। सतत् एवं समग्र मूल्यांकन कक्षाओं में कितनी सफल है व इसका विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है, प्रस्तुत शोध इन्हीं बिन्दुओं पर केन्द्रित किया गया है। शोध निष्कर्ष के अनुसार सतत् एवं समग्र मूल्यांकन का विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर सार्थक प्रभाव पड़ता है। असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर में वृद्धि होती है।

प्रस्तावना (Introduction) -

(IJPS) 2021, Vol. No. 12, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद ने उच्चतर शिक्षण संस्थानों में गुणवत्ता के लिए अपने प्रयास में नवीन प्रथाओं का प्रचार करना चाहती रही है, जो विभिन्न संस्थानों द्वारा सफलतापूर्वक संचालित किए जा रहे हैं। शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने के लिए समयबद्ध मूल्यांकन पर विशेष जोर दिया गया है। वर्तमान में शिक्षण संस्थानों का मूल्यांकन करने के लिए नैक ही अधिकृत एजेंसी है। सरकारों द्वारा काफी प्रयासों के बावजूद भी अधिकतर विश्वविद्यालयों/ महाविद्यालयों में प्रथम चक्र की नैक मूल्यांकन की प्रक्रिया अभी तक पूर्ण नहीं हो सकी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में नैक के अतिरिक्त अन्य मूल्यांकन एजेंसी बनाने की भी बात की गई है। शिक्षकों का मूल्यांकन उनके कार्य के आधार पर किया जाएगा, जिसमें भूतपूर्व छात्र, वर्तमान छात्र और उनके अभिभावक प्रमुख भूमिका निभाएंगे। अभी तक विद्यार्थियों के मूल्यांकन के लिए ज्यादातर संस्थान लिखित परीक्षा, बहुविकल्पीय परीक्षा और मौखिक परीक्षा के आधार पर करते हैं, किन्तु अब विद्यार्थियों का आंतरिक मूल्यांकन करने के लिए शैक्षणिक गतिविधियों से संबंधित सभी कार्य जैसे प्रोजेक्ट वर्क, सेमिनार, रोल प्ले, क्विज, पजल, क्लास टेस्ट, प्रैक्टिकल, सर्वे, बुक रिव्यू, स्टूडेंट पार्लियामेंट, स्क्रीनप्ले, निबंध, एग्जीबिशन, फेयर, शैक्षणिक भ्रमण आदि के द्वारा आंतरिक मूल्यांकन किया जा सकेगा। विद्यार्थियों के आत्मबल बढ़ाने के लिए स्व मूल्यांकन करने का भी अवसर दिया जाएगा। यह मूल्यांकन ऑनलाइन माध्यम से स्वनिर्देशात्मक सामग्री के अंतर्गत होगा, इसमें पारदर्शिता बनी रहेगी और विद्यार्थियों को अपना सही स्तर पता लगाने में मदद मिलेगी। प्रति माह संस्थानों में आवश्यकतानुसार मनोवैज्ञानिक की सेवा भी इच्छुक विद्यार्थियों हेतु ली जायेगी। मूल्यांकन प्रणाली में आमूलचूल बदलाव वर्तमान परिदृश्य की अपरिहार्य आवश्यकता है। नीति निर्धारकों ने विद्यार्थियों एवं अभिभावकों की समस्या के प्रति संवेदशीलता का परिचय देते हुए एक लचीली, पारदर्शी, सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास परक, निरंतर रचनात्मक मूल्यांकन प्रणाली की सिफारिश की है। निश्चित रूप से इससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होगा तथा वे मूल्यपरक, गुणवत्तापूर्ण, सुसंगत शिक्षा प्राप्त कर समाज और देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देंगें।

1. वह नैदानिक और सुधारात्मक है
2. वह प्रभावी प्रतिक्रिया के लिए प्रावधान करता है
3. वह छात्रों के स्वयं सीखने में उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए मंच प्रदान करता है
4. वह शिक्षकों को आकलन के नतीजों को ध्यान में रखते हुए अध्यापन को समायोजित करने में सक्षम करता है
5. वह उस अगाध प्रभाव की पहचान करता है जो आकलन छात्रों की प्रेरणा और आत्म-सम्मान, जिनके सीखने की प्रक्रिया पर महत्वपूर्ण प्रभाव होते हैं, पर डालता है।
6. वह छात्रों की स्वयं का आकलन करने और सुधार करने के तरीके को समझने में सक्षम होने की जरूरत की पहचान करता है
7. वह जो कुछ पढ़ाया जाना है उसकी परिकल्पना के लिए छात्रों के पूर्व ज्ञान और अनुभव की नींव पर विकसित होता है

8. कैसे और क्या पढ़ाया जाना है यह तय करने के लिए सीखने की विभिन्न शैलियों को समाविष्ट करता है
9. छात्रों को वे मापदंड समझने को प्रोत्साहित करता है जिनका उपयोग उनके काम को परखने के लिए किया जाएगा
10. छात्रों को प्रतिक्रिया के बाद उनके काम को सुधारने का अवसर प्रदान करता है
11. छात्रों की उनके समकक्षों की सहायता करने, और उनके द्वारा सहायता किए जाने में मदद करता है

कई नवाचार या योजनाएँ केवल पुस्तकों, रिपोर्ट या सम्मेलनों तक सीमित रह जाती हैं। प्रस्तुत अनुसंधान अध्ययन इस दिशा में एक कदम है कि वास्तव में यह मूल्यांकन प्रणाली विद्यालयों में अपनायी जा रही है या नहीं?

शोध के उद्देश्य (Objectives of the study) -

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध के लिए निम्नांकित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है –

1. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन से पूर्व एवं पश्चात् प्राप्तांकों में सार्थकता का पता लगाना।

2. सतत् एवं समग्र मूल्यांकन द्वारा नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह की शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाना।

3. मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन से नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह के व्यक्तित्व पर प्रभाव का पता लगाना।

4. संज्ञानात्मक क्षेत्र (विषय आधारित) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूहों के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाना।

5. असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूहों के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) -

1. नियंत्रित समूह पर सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन से पूर्व एवं पश्चात् प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं होगा।

2. प्रायोगिक समूह के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन से पूर्व एवं पश्चात् प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं होगा।

3. सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन से नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।

4. सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन से नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर नहीं होगा।

5. संज्ञानात्मक क्षेत्र (विषय आधारित) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्ताकों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।

6. असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहभागी क्रियाओं) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्ताकों में पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

परिसीमन (Delimitations of the study)

प्रस्तुत शोध को निम्नांकित सीमाओं में परिसीमित किया गया है :

1. स्तर – उच्च प्राथमिक शालाओं में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं तक।

2. क्षेत्र - पीलीभीत के शासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर तक।

3. कक्षा – उच्च प्राथमिक विद्यालय की कक्षा 8वीं तक।

शोध प्रक्रिया (Research Process) - प्रयोगात्मक विधि -

• **न्यादर्श (Sample):** शोधकर्ता द्वारा शोध कार्य हेतु पीलीभीत के शासकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 80 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया।

सारणी क्रमांक - 01

क्र	विद्यालय	समूह	विद्यार्थी संख्या
1	राजकीय हाई स्कूल	प्रायोगिक समूह	40
2	राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज	नियंत्रित समूह	40
	कुल संख्या		80

उपकरण (Tools) -

1. स्वनिर्मित सतत् एवं समग्र मूल्यांकन प्रश्नावली 2. स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण 3. व्यक्तित्व परीक्षण 4. स्वनिर्मित मूल्यांकन प्रश्नावली

सांख्यिकीय विश्लेशण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी विश्लेषण निम्नानुसार किया गया -

परिकल्पना क्रमांक -01: " नियंत्रित समूह के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन से पूर्व एवं पश्च प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं होगा।"

सारणी क्रमांक – 02: सतत् एवं समग्र मूल्यांकन के पूर्व एवं पश्चात् परीक्षण में अंतर की सार्थकता

चर	संख्या	परीक्षण	मध्य	प्रमाणिक विचलन	df	Table Value	t-Value	सार्थकता
नियंत्रित समूह	40	पूर्व	12.72	4.19	78	2.64	0.0012	NS
	40	पश्चात्	14.45	3.02				

व्याख्या – नियंत्रित समूह के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन के पूर्व एवं पश्चात् परीक्षण मापनी से प्राप्त प्राप्तांकों की सांख्यिकी गणना के उपरांत दोनों मध्यमानों का सार्थक अन्तर 1.73 प्राप्त हुआ। चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 0.0012 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान 1.99 से कम है अतः शोध परिकल्पना-01 स्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 02: "प्रायोगिक समूह के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन से पूर्व एवं पश्चात् प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारणी क्रमांक – 03: सतत् एवं समग्र मूल्यांकन के पूर्व एवं पश्चात् परीक्षण में अंतर सार्थकता

चर	संख्या	परीक्षण	मध्य	प्रमाणिक विचलन	df	Table Value	t-Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	40	पूर्व	10.77	3.40	78	2.64	4.079	0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।
	40	पश्चात्	13.35	3.14				

व्याख्या – प्राप्त परिणामों की सांख्यिकी गणना के पश्चात् दोनों मध्यमानों का सार्थक अन्तर 2.58 प्राप्त हुआ। चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 4.079 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान 1.99 2.64 से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 02 अस्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 04: "सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन से नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।"

सारणी क्रमांक – 04: विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर की सार्थकता

चर	संख्या	परीक्षण	मध्य	प्रमाणिक विचलन	df	Table Value	t-Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	40	पूर्व	29.3	6.085	78	2.64	7.533	0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।
नियंत्रित समूह	40	पश्चात्	22.8	5.242				

व्याख्या – प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों को लिया गया। प्राप्त परिणामों की सांख्यिकी गणना के पश्चात् दोनों मध्यमानों का सार्थक अंतर 6.5 प्राप्त हुआ। चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 7.53 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान 1.99 से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 03 अस्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 04: " सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन से नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारणी क्रमांक – 05: प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के व्यक्तित्व परीक्षण के प्राप्तांकों में अंतर की सार्थकता

चर	संख्या	परीक्षण	मध्य	प्रमाणिक विचलन	df	Table Value	t-Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	40	पूर्व	98.15	11.77	78	2.64	7.533	0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।
नियंत्रित समूह	40	पश्चात्	75.67	18.68				

व्याख्या – प्राप्तांकों की सांख्यिकी गणना से प्राप्त दोनों मध्यमानों का अंतर 22.48 प्राप्त हुआ। चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 2.93 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान 1.99 से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 04 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 05: "संज्ञानात्मक क्षेत्र (विषय आधारित) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारणी क्रमांक – 06: प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों में अंतर की सार्थकता

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	Df 1st&3rd	Table Value	t-Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	1 lll	7.075	1.85	78	2.64	3.44	0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया।
		8.3	1.32				

व्याख्या – उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययनरत प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन का माध्य क्रमशः 7.075 एवं 8.3 है जो कि प्रथम इकाई मूल्यांकन के मध्य से तीसरे इकाई मूल्यांकन का माध्य अधिक है। इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों के अंतरों में भिन्नता के कारण की सार्थकता की जांच की गई। चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 3.44 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान 1.99 से अधिक है दोनों में सार्थक अन्तर है। अतः शोध परिकल्पना-05 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक - 06.1: "असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं-इकाई मूल्यांकन) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारणी क्रमांक - 07 : प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन से प्राप्तांकों की सार्थकता

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	Df 1st&3rd	Table Value	t-Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	1 lll	11.55	2.66	78	2.64	5.28	0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया।
		15.05	3.38				

(IJPS) 2021, Vol. No. 12, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

व्याख्या - चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 5.28 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान 1.99 से अधिक है अर्थात सार्थक अंतर है। अतः शोध परिकल्पना – 6.1 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 6.2

"असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं– प्रोजेक्ट कार्य) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारणी क्रमांक - 7.1: प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों की सार्थकता (प्रोजेक्ट कार्य)

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	Df 1st&3rd	Table Value	t-Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	1 lll	13.03	3.26	78	2.64	4.11	0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।
		15.05	3.13				

व्याख्या - चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 4.11 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान 1.99 से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 6.2 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक -6.3: "असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं-शारीरिक स्वास्थ्य एवं शिक्षा) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारणी क्रमांक – 7.2 :प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों की सार्थकता (शारीरिक स्वास्थ्य एवं शिक्षा)

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	Df 1st&3rd	Table Value	t-Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	1 lll	13.03	3.26	78	2.64	4.11	0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।
		15.05	3.13				

व्याख्या - चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 5.27 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान 1.99 से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 6.3 अस्वीकृत की जाती है।

(IJPS) 2021, Vol. No. 12, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

परिकल्पना क्रमांक – 6.4: "असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं– साहित्य अभिरूचि) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारणी क्रमांक - 7.3: प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों की सार्थकता (साहित्य अभिरूचि)

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	Df 1st&3rd	Table Value	t-Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	1 lll	11.45	2.02	78	2.64	5.27	0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।
		14.87	3.20				

व्याख्या - चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 7.12 है जो 0.05 विश्वास स्तर पर सारणीगत मान 1.99 से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 6.4 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक - 6.5: "असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं- सांस्कृतिक क्रियाकलाप) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारणी क्रमांक – 7.4: प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों की सार्थकता (सांस्कृतिक क्रियाकलाप)

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	Df 1st&3rd	Table Value	t-Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	1 lll	10.02	2.62	78	2.64	3.23	0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।
		15.15	2.82				

व्याख्या - चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 3.23 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 6.5 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 6.6: "असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं– सांस्कृतिक क्रियाकलाप) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों में पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारणी क्रमांक – 7.5: प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों की सार्थकता (सांस्कृतिक क्रियाकलाप)

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	Df 1st&3rd	Table Value	t-Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	1	11.77	1.92	78	2.64	5.51	0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।
	lll	15.32	2.53				

व्याख्या - चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 5.51 है जो 0.01 विश्वास स्तर पर सारणीगत मान 2.64 से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 6.6 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 6.7: "असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं-खेलकूद) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों में पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।

सारणी क्रमांक - 7.6: प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों की सार्थकता (खेलकूद)

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	Df 1st&3rd	Table Value	t-Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	1	11.77	2.02	78	2.64	5.27	0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।
	lll	14.87	3.20				

व्याख्या - चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 2.79 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान 1.99 से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 6.7 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 6.8: "असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं – नियमितता) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारणी क्रमांक – 7.7: प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों की सार्थकता (नियमितता)

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	Df 1st&3rd	Table Value	t-Value	सार्थकता

प्रायोगिक समूह	1 lll	11.45 14.87	2.02 3.20	78	2.64	5.27	0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।

व्याख्या - चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 4.11 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान 1.99 से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 6.8 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक - 6.9 : "असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं- नेतृत्व एवं सहयोग) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारणी क्रमांक – 7.8: प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों की सार्थकता (नेतृत्व एवं सहयोग)

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	Df 1st&3rd	Table Value	t-Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	1 lll	13.03 15.02	3.26 3.13	78	2.64	4.11	0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।

व्याख्या - चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 5.28 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 6.9 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक - 6.10: "असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं– पर्यावरण जागरूकता एवं संरक्षण) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारणी क्रमांक – 7.9: प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों की सार्थकता (पर्यावरण जागरूकता एवं संरक्षण)

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	Df 1st&3rd	Table Value	t-Value	सार्थकता
	1	10.35	2.96	78	2.64	3.24	

प्रायोगिक समूह	lll	15.17	2.81				0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।

व्याख्या – चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 3.24 है जो 1.99 स्तर पर सारणीगत मान से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 6.10 अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष (Conclusions)

1. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत नियंत्रित समूह के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन के पूर्व एवं पश्चात् परीक्षण में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
2. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत प्रयोगात्मक समूह के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन के पूर्व एवं पश्चात् परीक्षण के प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर पाया गया है।
3. प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च पाई गई।
4. प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर पाया गया है। प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व लक्षण उच्च पाये गए।
5. प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों में अंतर पाया गया। तृतीय इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों में वृद्धि हुई।
6. असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर पाया गया। तृतीय इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों में काफी वृद्धि हुई।

सुझाव (Suggestions)

शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निम्न सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. शिक्षकों द्वारा सतत् एवं समग्र मूल्यांकन के क्रियान्वयन में साधन, समय का अभाव, अधिक परिश्रम व छात्र संबंधी कठिनाइयाँ प्रदर्शित की गयी इस संबंध में उनकी समस्याओं को दूर करने हेतु आवश्यक कदम उठाये जाने चाहिए।
2. अधिकांश शालाएँ दो पालियों वाले विद्यालयों में खेलकूद एवं अन्य गतिविधियों के प्रति ध्यान नहीं दिया जाता, कारण कि समय व मैदान का अभाव है। अतः कोई भी विद्यालय भवन विहीन न हो ताकि स्वतंत्र रूप से एक ही पाली में विद्यालय संचालित हो सके। प्रत्येक विद्यालय में खेलकूद एवं अन्य सभी असंज्ञानात्मक गतिविधियाँ संचालित हो सकें। अतः विद्यालय भवन एवं खेल का मैदान उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

(IJPS) 2021, Vol. No. 12, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

3. प्रत्येक माह सतत् मूल्यांकन का निरीक्षण किया जाए एवं शिक्षकों को मार्गदर्शन दिया जाए। छात्रों की मूल्यांकित उत्तरपुस्तिका का निरीक्षण शिक्षक प्रति माह करें। सतत् मूल्यांकन का निश्चित समय निर्धारित करें ताकि सभी विद्यालयों में एक रूपता बनी रहे।

संदर्भ ग्रंथ (References) -

1. शास्त्री, के. एन अध्यापक शिक्षा दिल्ली, प्रेरणा प्रकाशन. 2008
2. भार्गव, महेश, आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन., एच. पी. भार्गव बक हाउस, आगरा: 1985
3. चौबे, सरयू प्रसाद, शिक्षा मनोविज्ञान., आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, 1990
4. जोशी, अनुराधा, शिक्षण दक्षता एवं सूक्ष्म शिक्षण, आगरा, प्रिंट पैलेस 2005
5. कपिल, एच. सांख्यिकी के मूल तत्व आगरा, विनोद पुस्तक मदिर, 1992
6. कथरिया. रामदेव प्रसाद, सूक्ष्म शिक्षण एवं शिक्षण प्रतिमान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर,2008
7. माथुर, सावित्री, सूक्ष्म शिक्षण एवं शिक्षणकोशल. जयपुर, आस्था प्रकाशन 2007

REFERENCES

1. Shastri, K.N., Adhyapal Shiksha Delhi, Prerna Publication 2008
2. Bhargav, Mahesh, Adhunik Manivaigyanik evum Mapan, H. P. Bhargav Book House, Agra 1985
3. Chaubey, Saryu Prasad, Shiksha Manovigyan, Agra, Vinod Pustak Mandir 1990
4. Joshi, Anuradha, Shikshan Dakshta evum Sooksham Shikshan, Agra, Print Palace 2005
5. Kapil, H., Sankhiyiki ke Mool Tatva Agra, Vinod Pustak Mandir 1992
6. Kathariya, Ramdev Prasad, Sooksham Shikshan evum Shikshan Pratimaan, Agra, Vinod Pustak Mandir 2008
7. Mathur, Savitri, Sooksham Shikshan evum Shikshankoshal, Jaipur, Aastha Publication 2007